श्री गणेशजयन्ती, वि० सं० १९७६.

ॐ

श्रीरामस्तवरत्नम्

हिन्दी-पद्यानुवाद-संवलितम् ।

कविभूषणाऽऽशुकविना

श्रीनित्यानन्दशास्त्रिणा रचितम् ।

विद्याभूषण-भगवतिलालेन कवेः सहोदरभ्रात्रा

अजमेर—जैन—प्रिंटिंग—प्रेसे

प्राङ्क्य प्राथितम्

इदं अमूल्यम् ।

॥ श्रीरामो विजयते ॥
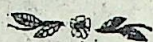
श्रीरामस्तवरत्नीय-पद्यपाठादिमान्तिमपद्यैः समुच्चार्यमाणौ

इमौ श्लोकौ ।

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसंपदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥१॥
हनूमन् यत्नमास्थाय दुःखक्षयकरो भव ।
स तथेति प्रतिज्ञाय मारुतिर्भीमविक्रमः[२] ॥ २ ॥

---

१ अनयोः सुप्रसिद्धः प्रथमः श्लोकः, तस्य हि संपुटादिकरणेन श्रीवाल्मीकिरामायणीयपाठा आपदपहारिणः संपत्कारिणश्च भवन्ति । द्वितीयः पुनः श्रीवाल्मीकिरामायणस्य सुन्दरकाण्डस्य ३९ तमस्य सर्गस्य पञ्चमः श्लोको वर्तते । अस्य संपुटीकरणेन सुन्दरकाण्डपाठो विशेषेण दुःखक्षयकरो भवतीत्यनुष्ठानकारिणां विदुषां कथनपरम्परा । इत्यनेन अस्य स्तवरत्नस्य विपद्विनाशित्वं दुःखक्षयकरत्वं संपत्कारित्वं च सुतरां व्यक्तम् । २ अत्र प्रस्तुते 'अभूत्,' इत्यध्याहार्यम् ।

॥ श्रीरामस्तवरत्नम् ॥

(१)

आदित्य—भासुरनखौ विपदासमूह-
पर्याय—दाव-दहने—दवचित्रभानू ।
दासप्रियौ तव पदौ रघुनाथ धीमन्
मञ्जुश्रियौ शरणयामि सुमङ्गलाय ॥

हिन्दीपद्यानुवाद

(१)

रवि-मण्डल के समान जिनके नखमण्डल हैं कान्तिनिधान,
झुलसाने में विपत्ति--वन के जो हैं, सच, दावाग्नि-समान ।
उन्हीं तुम्हारे सेवकप्यारे, सुन्दर शोभाओं के धाम,
चरणों को सेमार्थ शरण मैं करता हूं, हे विद्वन् राम ! ॥

---

१ विपदांवां आपदां समूहः पर्यायो रूपान्तरं यस्य तथाभूतस्य दावस्य वनस्य दहने २ दावाग्नी ।

(२)

पश्यत्-प्रिया तव तनू रघुवंश—रत्न

हर्त्री रुजां सपदि दर्शित-हर्ष-सीमा।

तापच्छिदिन्दुरुगिव क्षणदा सुखस्था[1]

रंरम्यतां मनसि मेऽत्र तमोऽपनीय॥

(२)

चन्द्र-कान्ति-सम दर्शक-प्यारी, रोगों को हरने वाली,

परम हर्ष झट देने वाली, ताप-नाश करने वाली।

उत्सव देने वाली, सुखमय मूर्ति तुम्हारी राम! हरे!,

मिटा अँधेरा मेरे मन में, खेल खूब ही किया करे॥

---

१ क्षणं उत्सवं ददाति तथाभूता तथा सुखस्था राममूर्तिः। चन्द्रकान्ति-पक्षे तु क्षणदासु रात्रीषु खे आकाशे तिष्ठति तथोक्ता॥

(३)

दाहापहारि-शुभदृक्-प्रसरोदबिन्दु-

तान[1]--प्रवर्ष-परिधर्षित-तर्षिदुःख ।

इंरहि दर्शनपथे कृतलोकरक्ष

सर्व--प्रियोऽब्द[2] इव राम जगत्सुखाय ॥

(३)

मेघ समान दाह-हर, दर्शन-जल-बूँदें बरसा करके,

तृषित जनों के तृषा दुःख को, मिटा उन्हें हरषा करके ।

जनकी रक्षा करनेवाले, सबके प्यारे, राम ! हरे ! ,

आप सुखों के लिए जगत् के, दृष्टि विषय में रहा करें ॥

---

१ तानः विस्तारः समूह इति यावत् । २ अब्दो मेघः ।

(४)

वन्द्येऽर्कवंश उपजन्य भवांस्त्रिलोक-
संकल्पमात्र--परिकल्पन--कर्म-कारो ।
पत्न्याऽनुजैश्च गुरुभिर्घटितोऽब्जनाभ
दांपत्य[1]--हार्द--गुरुभक्ति-गुरुर्बभूव ॥

(४)

मन की इच्छा ही से तीनों लोकों के रचने वाले !
मान्य सूर्य-कुल में पैदा हो पद्मनाभ[A] संज्ञावाले ! !
स्त्री, भ्राताओं, मां बापों को करके मनुज-जन्म में साथ,
क्रम से प्रेम, स्नेह, भक्ति-व्रत तुम ही ने सिखलाया नाथ ! ॥

---

१ दांपत्यं पतिपत्न्योः प्रेम, हार्दं भ्रातृस्नेहः, गुरूणां मातापित्रादीनां भक्तिश्चेत्येतेषु गुरुः शिक्षकः ।

A जगत् सृष्टि का कारण कमल जिनकी नाभि में रहा हो ऐसे भी ।

(५)

लोके शुभाय भवता भवताऽवता स
काकोदरः फणभृतां रिपुणेव तात ।
भिन्दन् स्थितिं रजनिचारिपतिः प्रमेथे
राम प्रशासक इतीह भवान् हि भाति ॥

(५)

जन्म जगत् में लेने वाले करने को शुभ ही के काम,
रक्षा करते हुए आपने जग के पूज्य पिताजी ! राम ।
मर्यादा को तजने वाले रावण को मारा वैसे—
गरुड़ सर्प को जैसे, जो तुम कहलाते "शासिक" ऐसे ॥

---

१ स्थितिं मर्यादाम् ।

A शासन करनेवाले यों कहलाते हो ।

(६)

यंमन्यमानमनिशं मुनिभिः प्रदीप्त-

श्रीवायुसूनु-नत-मौलि-मिलत्सुकान्ति ।

रामस्य तत् पदयुगं मुकुटं सुराज्ञा-

मंहो विनाशि विनमामि सदा सुखाय ॥

(६)

मुनिवर जिसका मनन निरन्तर करते, जिसकी कान्ति खिली-

वन्दन करते हनूमान के दीप्त मुकुट से खूब मिली ।

जो है मुकुट भक्त राजों का, पाप-विनाशक, रघुवर के—

उस पदयुग को प्रणाम नित मैं करता, कारण सुख[A]भर के ॥

A बहुत से सुख के कारण

(७)

भूषा सतीषु दयिता बत यस्य वामा[1]
योग्यं त्ववाम इति लक्ष्मणकोऽस्ति चारु ।
भूत्वा च संमुखमवाञ्चति वायुसूतिर्[2]
योज्यात् स वः प्रभुरनिन्द्यधियाऽतिशोभी ॥

(७)

जिनके दक्षिण रहे सोहते लक्ष्मण यह तो योग्य बहुत,
पर सतियों में भूषण सीता प्रिया वाम[A] है, यह अद्भुत ।
हनूमान जिनके संमुख हो प्रणाम करते हैं शोभित,
यों अतिशोभित वे प्रभु तुमको करें शुद्ध मति से योजित ॥

---

1 वामा प्रतिकूला इत्यर्थेन बत शब्दो विरोधमाभासयति । वामा दक्षिणेतरा इत्यर्थेन तत्परिहारः । 2 वायोः प्रसूतत्वाद् वायुसूतिर्हनुमान् ।

A वाम अर्थात् प्रतिकूल है, ऐसे अर्थ के झलकने से विरोधाभास अलंकार है । वास्तव में 'वाम' अर्थात् बांई है हां ॥

(८)

नम्र कृतार्थयसि लक्ष्मण चेद्दासम्
मा रक्ष्यासि चेत्त्वमपि जानकि हेऽम्ब देवि ।
यद्यातनोषि हनुमन् करुणामवश्य
हंसायतां मम हि मानसमेत्य रामः ॥

(८)

हे प्रसन्न लक्ष्मण ! सेवक को जो कृतार्थ करना ठाना,

माता ! सीते ! देवि ! मुझे जो रक्षणीय[A] मन में माना ।

प्रीतिमान ! हनुमान ! आप यदि करुणा करते हो मुझ पर,

तो मेरे मन-मानस-सर में आकर हंस बनें रघुवर ॥

A रक्षा करने योग्य ।

राधाकृष्ण-पराख्यया पितृ-पितृव्यो वैद्यनाथोऽकरोत्
पुत्रं यं, किल माधवि र्भगवतीलालोऽग्रजोऽध्यापयत्।
नित्यानन्दकविः स्तवं स कृतवान् दुःखापदां नाशकं
पादाऽऽद्याऽन्तिम-वर्णनिर्यदमल-श्लोकं पदं संपदाम्

वैजनाथ दादा ने जिसको "राधाकृष्ण"[A] स्वपुत्र किया,
माधव कवि के पुत्र भगवतीलाल ज्येष्ठ ने ज्ञान[B] दिया।
नित्यानन्द नाम उस कवि ने स्तोत्र किया दुख-विपत्ति-हर,
पाद-प्रथम-अन्तिम वर्णों से श्लोक[C]-प्रकाशक संपत्-कर ॥

इति श्रीयोधपुरवास्तव्य-दाधीच (दाधिमथ) कामन्योपाख्य-
व्यास—वैद्यनाथनन्दन—कविभूषणाशुकवि—श्री
नित्यानन्दशास्त्रि-विरचितं सहिन्दीभाषानुवादं
श्रीरामस्तवरत्नं समाप्तम् । शम् ॥

A "राधाकृष्ण" इस नाम से दादा (पिता माधवजी के काका) ने जिसे दत्तक रीति में अपना पुत्र किया। B शिक्षा। C श्लोक जो कि टाइटल पेज के पिछाड़ी दिये हुए हैं, उन्हें; चरणों के पहले और आखिरी अक्षरों से निकाल देने वाला। अर्थात् इस स्तोत्र के पाद के प्रथमाक्षरों से 'आपदाम्' और अन्त्याक्षरों से 'हनूमन्' इत्यादि श्लोक निकलता है ॥ शम् ॥

दधिमती

(श्रीदाहिमा महासभा का हिन्दी-मासिकपत्र)

संपादक-पं० गोविन्दनारायण शर्मा आसोपा बी० ए०.

स० संपादक—पं० नित्यानन्द शास्त्री आशुकवि कविभूषण.

इसमें दधिमती माहात्म्य और श्रीदाहिमा महासभा की कार्यवाही के सिवाय जाति-सुधार सम्बन्धी सरस हिन्दी कविता और सार गर्भित लेख प्रकाशित होते हैं। इसीलिये यह सर्व साधारण के ग्रहण करने योग्य है। प्रत्येक दाहिमा भाईके घर में तो यह अवश्य रहनी चाहिये। वार्षिक मूल्य २)

पता—मन्त्री, श्रीदाहिमा महासभा, प्रधानकार्य्यालय, जोधपुर.

पण्डित नित्यानन्द शास्त्री कृत कुछ पुस्तकें:—

श्रीमारुतिस्तव--इसमें प्रत्येक श्लोक के पादके प्रथमाक्षरों से श्रीरामरक्षा स्तोत्र निकलजाता है। इस की टीका पं० भगवती लालजी विद्याभूषण ने ऐसी बनाई है कि अर्थ झट समझ में आजाता है। मूल्य ।) पता--श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई.

लघुच्छन्दोऽलंकारदर्पणः (देवीस्तवः)

स्वकृत संस्कृत टीका हिन्दी टीका सहित। इसमें देवीकी स्तुति के साथ वाग्भटालंकार के सब अलंकार और श्रुतबोध के सब छन्द क्रमानुसार उदाहरण रूप से दिखा दिये गये हैं। यह पुस्तक गुजरात की संस्कृत पाठशालाओंमें पढ़ाई जाने के लिए पसन्द की गई है। मूल्य ।ᐟ) पता-श्रीवेंकटेश्वरप्रेस बम्बई

यह पुस्तक बाहिरके संस्कृत विद्वानोंको आध आने के टिकट भेजने से इस पते पर मिलेगी-पं० देवीदत्त शर्मा,

श्रीदरबार हाई स्कूल-जोधपुर.